International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 153-154

कठोपनिषद में श्रेय और प्रेय

डॉ० पल्लवी सिंह
वरिष्ठ प्रवक्ता (संस्कृत), के० आर० महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

वैदिक–धर्म की मूलतथ्य–प्रतिपादिका प्रथानमयी मानी गयी है जिसके अन्तर्गत उपनिषद गीता एवं ब्रह्मसूत्र (वेदान्त दर्शन) आते हैं। इस प्रस्थान त्रयी में उपनिषद को ही सर्वोपरि स्थान प्रदान किया गया है क्योंकि गीता एवं ब्रह्मसूत्र की आधार शिला उपनिषद ही है। भारतीय वैदिक वाड्मय के साहित्य में उपनिषदों का वास्तविक स्वरुप यही है। प्रायः सभी उपनिषदों में उस महान ब्रह्मतत्त्व का ही नाना प्रकार से प्रतिपादन किया गया है। इसी प्रकार ब्रह्म की अवाप्ति के साधन अनेक हैं। साध्य अथवा प्राप्य वस्तु केवल एक ब्रह्म ही हैं। श्रेय ईश्वर प्राप्ति हेतु अनुकरणीय है जबकि प्रेय मनुष्य को सांसारिक बन्धनों के बाहुपाश में बॉध इस जन्म और मृत्यु के आवागमन युक्त मे फॅसा देती है। कठोपनिषद के नचिकेतोपाख्यान में श्रेय और प्रेय के स्वरुप का स्पष्टतः निर्देश हुआ है और मनुष्य द्वारा कौन अनुकरणीय है, इस पर प्रकाश डाला गया है।

कठोपनिषद में महान अद्वैत तत्व का गम्भीर विश्लेषण किया गया है। पिता द्वारा मृत्यु को सौंप दिये जाने पर जब नचिकेता यमसदन पहुॅचा तो वहॉ यमराज को अनुपस्थित देख वह इन्तजार में तीन दिन भूखे – प्यासे बिता दिया। यमराज जब आए तो उन्होंने नचिकेता का यथासत्कार करने के बाद तीन दिनों के कष्ट के लिए तीन वर मॉगने को कहा। प्रथम वर के रुप में नचिकेता ने पिताश्री के क्रोध के शान्त होने व प्रसन्न होने का वर मॉगा। द्वितीय वर के रुप में उसने स्वर्ग की साधनभूत अग्नि–विज्ञान का उपदेश प्राप्त किया। तृतीय वर के रुप में नचिकेता ने कहा कि –

''मृत होने पर संशय है यह आत्मा कभी नहीं क्या रहता?
कोई कहते रह जाता है कोई कहते ना है रहता।
इस रहस्य को मुझे दीजिए आत्मा क्या है और अमरता?

यही तीसरा वर है मेरा, मेरे गुरु हे मृत्यु देवता। पूर्वप्रदत्त वरों की भॉति यम ने इसे सहज भाव से नहीं स्वीकारा। नचिकेता के संकल्प की दृढ़ता व जिज्ञासा की गम्भीरता की परीक्षा उन्होंने बड़े–बड़े प्रलोभन देकर ली। बार–बार संसार की सम्पूर्ण सम्पदाओं का प्रलोभन भी नचिकेता को नहीं डिगा सकी और उसने साफ कहा – वरस्तु मे वरणीयं सएवः । नचिकेता को ब्रह्मज्ञान का निर्मल अधिकारी समझकर सर्वप्रथम श्रेय व प्रेय इन दो मॉगों का ज्ञान दिया। यमाचार्य बोले कि–

अन्यच्छेयोऽन्ययुर्तेव प्रेयस्ते उभं नानार्थे पुरुषं सिनीतः ।
तयोः श्रेय आददानस्थ साधु भवति श्रेयतेइयासि प्रेयो बृणीते।।

मनुष्य के समक्ष दो मार्ग है जो उन्हें अपनी–अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। एक है श्रेय मार्ग और दूसरा है प्रेय मार्ग। श्रेय अर्थात् श्रेयस्, प्रेय अर्थात् प्रेयस्।

दोनों ही मार्ग बड़े ही आकर्षक हैं, लुभावने हैं किन्तु एक मनुष्य को बन्धनमुक्त करता है तो दूसरा बॉधता है। दोनों मार्गों का परिणाम भिन्न–भिन्न है। सांसारिक भोगों की प्राप्ति के मार्ग को जिसमें मनुष्य को स्त्री, पुत्र, धन, भवन, सम्पत्ति, यश, सुख–सुविधा इत्यादि लौकिक समृद्धि व ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है, प्रेय मार्ग समझना चाहिए और सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा प्राप्त कर नित्य व आनन्दस्वरुप भगवान के आनन्द की अनुभूति प्राप्त करने का उपाय अर्थात् ब्रह्म की प्राप्ति का उपाय ही श्रेय मार्ग है। प्रेय अर्थात् इन्द्रियों को प्रिय लगनेवाले सांसारिक सुख तथा श्रेय अर्थात् आत्मा का सच्चा कल्याण, दोनों में भेद दिखलाते हुए यमराज ने कहा कि–

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतः तौ सम्परीत्य विनिक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽमिप्रेयसों वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते।।

जब प्रेय अर्थात् तात्कालिक वा इन्द्रियसुख और श्रेय अर्थात सच्चा और चिरकालिक कल्याण ये दोनों मनुष्य के सामने उपस्थित होते हैं तो बुद्धिमान मनुष्य उन दोनों में से किसी एक को चुन लेता है। जो मनुष्य यर्थाथ में बुद्धिमान होता है वह प्रेय की अपेक्षा श्रेय को अधिक पसन्द करता है। परन्तु जिसकी बुद्धि मन्द होती है उसको आत्म कल्याण की अपेक्षा प्रेय अर्थात् वाह्य सुख ही अधिक अच्छा लगता है।

यमाचार्य में इन दोनों मार्गें को मनुष्य को बॉधने वाला बताया क्योंकि दोनों ही मनुष्य को बॉधने वाला बताया क्योंकि दोनों ही मनुष्य को अपनी ओर खींचते हैं। अधिकांश व्यक्ति यह समझकर कि सांसारिक भोग तत्काल सुख प्रदान करने वाले होते हैं उसके परिणाम के बारे में न सोचते हुए इसी प्रेय मार्ग का अवलम्बन कर लेते हैं। बुद्धिजीवी किन्तु कोई विरले पुरुष ही भोगों की परिणाम दुखता का रहस्य जानकर उस ओर से विरक्त होकर श्रेय मार्ग का अवलम्बन करते हैं। इस प्रकार श्रेय मार्ग के द्वारा सभी प्रकार के कष्टों से मुक्त होकर ब्रह्म में असीम आनन्द की अनुभूति होती है। वैसा मनुष्य ब्रह्म को प्राप्त कर लिया करता है। किन्तु जो व्यक्ति प्रेय मार्ग के द्वारा सांसारिक सुखों के साधनों की ओर मुड़ जाता है वह मानव–जीवन के चरम लक्ष्य तक नहीं पहुॅच पाता है और आवागमन के बन्धन में पड़कर विभिन्न योनियों के भोग ही भोगता है। शास्त्रों में उल्लेख है कि –

यतोम्युदयनि : श्रेयससिद्धिः स धर्मः

''अर्थात् जिन साधनों के द्वारा लोक में कल्याण व परलोक में निःश्रेयस की प्राप्ति होती है वही धर्म है।''

श्रेयमार्ग मनुष्य को अपने जीवन के चरम–लक्ष्य की ओर ले जाता है अतः मानव मात्र के लिए वही अनुकरणीय है। दूसरे शब्दों में श्रेय और प्रेय को क्रमशः विद्या और अविद्या भी कहा जा सकता है। एक ज्ञानमार्ग है दूसरा अज्ञानमार्ग इसी कारण प्रेय की इच्छा को अशुभ और श्रेय की इच्छा को शुभ एवं परम कल्याणकारी कहा गया है।

इस प्रकार श्रेय – प्रेय मार्ग का विवेचन करते हुए यमाचार्य ने नचिकेता को श्रेय की महत्ता बतलायी। वस्तुतः औपनिषदिक ज्ञान ही श्रेय मार्ग का समर्थक है। प्रेय की और आकृष्ट मानव को यही ज्ञान (श्रेय) उत्तम मार्ग की और प्रेरित करता है और सत्पथ पर अग्रसर करता है।

''असतो मा सदगमय, तमसो मा ज्योर्तिगमय, मृत्योर्मा अमृतमगमय'' की घोषणा उपनिषद की ही है। हमें मृत्यु से अमरता की ओर ले चल, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चल, असत्य से सत्य की ओर ले चल। यह मार्ग श्रेय मार्ग ही है। श्रेय यदि विवेक है तो प्रेय अविवेक है। मनुष्य को चाहिए कि इन दोनों से अपनी बुद्धि के द्वारा हँस के नीर – क्षीर विवेक पद्धति से अच्छी तरह परखकर श्रेय मार्ग की उपासना करे।

अतः उपनिषदों में ऐसा अध्यात्मिक मानसरोवर कहा गया है जो ज्ञान की अनेक सरिताओं से भरा पड़ा है इस पुण्य भूमि में मानव भाव के प्रवाहित होता है। इहलौकिक व परलौकिक कल्याण के लिए प्रवाहित होती है। इस ज्ञान की अमृत धारा को जो व्यक्ति सच्ची भावना एवं एकग्रता में डुबकी लगा लेता है उसे आत्मज्ञान का साक्षात्कार हो जाता है तथा वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 गीता
2 उपनिषद्
3 सत्य और धर्म – यशपाल जैन
4 भारतीय धर्म और दर्शन – बलदेव उपाध्याय